समाजीकरण की प्रक्रिया
(Process of Socialization)

व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर कुछ-न-कुछ नई अनुभूतियों एवं व्यवहारों को सीखता रहता है यही कारण है कि समाजीकरण की प्रक्रिया को एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया माना गया है। समाजीकरण की प्रक्रिया से तात्पर्य ऐसी प्रणाली से है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति सामाजिक व्यवहारों को सीखता है। समाजीकरण की प्रमुख प्रक्रियाएँ निम्नांकित हैं—

→ पालन-पोषण प्रक्रिया (Rearing Practices) — व्यक्तियों के समाजीकरण को पालन-पोषण की प्रक्रिया काफी प्रभावित करती है। न्यूकाम्ब (1966) के अनुसार जिन बच्चों के पालन-पोषण में माता-पिता द्वारा उचित दुलार, प्यार तथा देख-रेख इत्यादि किया जाता है, उनमें सामाजिक नियमों को सीखने तथा उसके अनुकूल व्यवहार की तीव्र प्रेरणा होती है। जिससे ऐसे बच्चों में समाजीकरण की प्रक्रिया तीव्र एवं संतोषजनक होती है। वहीं जिन बच्चों को उचित दुलार, NOTES

Scanned with CamScanner

प्यार एवं देख-रेख नहीं हो पाता है तथा जिनके लालन-पालन की प्रक्रिया दूसरे व्यक्ति द्वारा की जाती है। उनमें समाजीकरण की प्रक्रिया धीमी एवं मंद गति से होती दिखाई पड़ती है।

→ अनुकरण (Imitation) — अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा बच्चे तथा व्यस्क दोनों ही समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के व्यवहारों को इस उम्मीद से सीखते हैं कि इससे उनकी सामाजिक स्वीकृति में बढ़ोतरी होगी। इससे भी समाजीकरण की प्रक्रिया में तीव्रता आती है।

→ संसूचन या सुझाव (Suggestion) — सुझाव द्वारा भी समाजीकरण की प्रक्रिया तेज होती है। शेफर (1977) ने यह बतलाया है कि बच्चों में सुझाव द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया विशेष रूप से तीव्रता से होती है। माता-पिता तथा शिक्षक प्रायः बच्चों को सामाजिक व्यवहार के भिन्न भिन्न पहलुओं की उपयोगिता के बारे में तरह-तरह के सुझाव देते हैं जिससे उनका समाजीकरण तेजी से होता है।

→ सहानुभूति (Sympathy) — समाज मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जिन व्यक्तियों में सहानुभूति का गुण अधिक होता है, उनकी सामाजिक स्वीकृति काफी अधिक होती है। उन्हें दूसरे व्यक्तियों के साथ सामाजिक समायोजन में काफी मदद मिलती है। जिससे उनका समाजीकरण अधिक तेजी से होता है। इसी तरह, जिन व्यक्तियों में सहानुभूति के गुण का अभाव होता है, उनके समाजीकरण की प्रक्रिया भी धीमी हो जाती है।

→ तादात्म्य (Identification) — जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मॉडल मानकर उसके व्यवहारों को अपनाने की कोशिश करता है, तो इस प्रक्रिया को तादात्म्य कहा जाता है। तादात्म्य द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के बिल्कुल समान व्यवहार करना चाहता है। इस प्रकार का तादात्म्य बच्चों में अधिक होता है, जिसके कारण वे अपने माता-पिता एवं

Scanned with CamScanner

शिक्षकों के व्यवहारों को सीखते हैं। तादात्म्य का दूसरा रूप वह होता है, जिसमें व्यक्ति दूसरे के अपेक्षा के अनुरूप व्यवहार करने को तत्पर रहता है। इस प्रकार व्यक्ति की समाजीकरण की प्रक्रिया तीव्र हो जाती है।

→ सहयोग (Co-operation) — जब व्यक्तियों में सहयोग की भावना तीव्र होती है तो ऐसे व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के साथ किसी भी तरह की सामाजिक परिस्थितियों में समायोजन आसानी से कर लेते हैं। जिससे उनमें समाजीकरण तेजी से होता है।

→ प्रतियोगिता (Competition) — जिन व्यक्तियों में प्रतियोगिता की भावना अधिक होती है, उनमें अधिक ध्यान कमाने, अधिक उपलब्धि प्राप्त करने, सामाजिक प्रतिष्ठा पाने आदि की आकांक्षा अधिक होती है। फलस्वरूप, किसी भी सामाजिक व्यवहार के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर वे काफी ध्यान देते हैं और उन्हें सीखने की कोशिश करते हैं। इससे उनका समाजीकरण तीव्रता से होता है।

→ भाषा (Language) — भाषा संचार का एक प्रमुख माध्यम है। इसके द्वारा ही व्यक्ति अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं, भावनाओं आदि को दूसरों तक पहुँचाता है। भाषा व्यक्ति को उपयुक्त सामाजिक व्यवहार उपयुक्त सामाजिक परिस्थिति में करने में मदद करता है। अतः स्पष्ट है कि भाषा के माध्यम से समाजीकरण की प्रक्रिया तेजी से संपन्न होती है।

→ प्रचार के माध्यम (Means of Propaganda) — प्रचार के विभिन्न माध्यमों जैसे— रेडियो, टेलीविजन, अखबार, सिनेमा आदि द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया तीव्रता से होती है। इन माध्यमों के द्वारा व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, जिनका विश्लेषण कर व्यक्ति भिन्न-भिन्न सामाजिक व्यवहार करना सीख पाता है। जिससे समाजीकरण की प्रक्रिया में तीव्रता आ जाती है।

Scanned with CamScanner

→ सामाजिक मनोवृति का विकास (Development of Social attitudes) — जब व्यक्ति में अन्य व्यक्तियों तथा सामाजिक क्रियाओं जैसे — जन्म दिन पार्टी,

APPOINTMENTS दुर्गा पूजा उत्सव, विवाह आदि के प्रति अनुकूल

8 सामाजिक मनोवृति का विकास होता है, तो उस व्यक्ति का सामाजीकरण अधिक तेजी से होता है। जिन व्यक्तियों

9 का सामाजिक मनोवृति विभिन्न सामाजिक घटनाओं एवं समस्याओं के प्रति अनुकूल होती है, उनकी सामाजिक

10 मान्यता अधिक हो जाती है। जिससे उन्हें सामाजिक समायोजन में सहायता मिलती है और वे अनेक तरह

11 के सामाजिक व्यवहार सीख लेते हैं। जिससे उनका समाजीकरण अधिक तीव्रता के साथ होता है।

12 इस प्रकार, देखा जा सकता है कि व्यक्ति का समाजीकरण अनेक प्रक्रियाओं द्वारा तीव्रता के साथ

1 होता है। जिनमें अनुकरण, सुझाव, सहानुभूति, तादात्म्य आदि अधिक प्रमुख माने जाते हैं।

2

Scanned with CamScanner